

स्ट्रॉबेरी उत्पादन: एक अच्छा कृषि आय का स्रोत

जितेन्द्र कुमार, के० के० प्रमाणिक, मधु पटियाल, संतोष वाटपड़े, धर्मपाल व दीपक नेगी
भा० कृ० अनु० प० - भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, शिमला-4 (हि०प्र०)
पिन: 171004

स्ट्रॉबेरी का उत्पादन विश्व में ईसाई युग से पहले रोम में शुरू हो चुका था। इसकी खेती शीतोष्ण, सम-शीतोष्ण, उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और विभिन्न जलवायु परिस्थितियों से लेकर इजराइल की रेतीली भूमि के लिए अनुकूलित हैं। भारत में स्ट्रॉबेरी की खेती हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में 1960-70 के दशक में प्रचलित हो चुकी थी परन्तु प्रति हेक्टेयर कम उत्पादकता, कम आमदनी, फलों का जल्दी खराब होना, अनुपयुक्त किस्मों का चयन, ज्यादा श्रम व मेहनत और उत्पादन तकनीक की जानकारी का आभाव आदि कारणों से यह ज्यादा प्रचलित नहीं हुई। विश्व में स्ट्रॉबेरी की लगभग 600 किस्मों को उगाया जाता है, जो स्वाद और रंग में एक दूसरे से बिल्कुल अलग होती है। किन्तु भारत में स्ट्रॉबेरी की कुछ ही किस्मों को उगाया जाता है। जो अलग-अलग जलवायु और भूमि के हिसाब से अधिक पैदावार देती है। भारत के उत्तरी-पूर्वी राज्यों के साथ पंजाब, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश और दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में किसान स्ट्रॉबेरी उत्पादन से अच्छी कमाई कर रहे हैं परन्तु स्ट्रॉबेरी की नई पौध के लिए ये गर्म इलाके पहाड़ी क्षेत्रों पर निर्भर रहते हैं जहाँ

स्ट्रॉबेरी बारहमासी है। स्ट्रॉबेरी उत्पादन को अधिक मुनाफे वाली खेती के रूप में जाना जाता है। भारत में स्ट्रॉबेरी की खेती को पॉलीहाउस, हाइड्रोपॉनिक्स, और सामान्य तरह से कई तरह की भूमि और जलवायु में भी किया जा रहा है। यूरोप और उत्तरी अमेरिका से अधिक उत्पादकता वाली किस्मों के आयात के कारण स्ट्रॉबेरी उत्पादन और भी प्रचलित हो रहा है।

स्ट्रॉबेरी फलों में पोषक तत्व और उपयोग

स्ट्रॉबेरी एक स्वादिष्ट हल्का खट्टा मीठा फल है। यह एक मात्र ऐसा फल है, जिसके बीज फल के ऊपरी/बाह्य हिस्से पर लगे होते हैं। स्ट्रॉबेरी में विटामिन सी, ए और विटामिन के, एंटीऑक्सिडेंट, खनिज पदार्थों और प्रोटीन की अच्छी मात्रा पायी जाती है। फलों को मुख्यतः ताजा खाया जाता है जबकि प्रसंस्कृत फलों का जैम, महक संरक्षक, मिष्टानो जैसे केक, शीतल पेय व चेविंगम आदि में भी उपयोग किया जाता है।





स्ट्रॉबेरी की खेती में उपयुक्त मिट्टी, जलवायु और तापमान

स्ट्रॉबेरी के पौधे सर्दियों की जमावदार ठंड और वसंत ऋतु की ठंड से ज्यादा प्रभावित होते हैं। लम्बी फूलन अवधि के कारण वसंत ऋतु की ठंड से स्ट्रॉबेरी के पौधों को ज्यादा नुकसान हो जाता है। इसलिए ज्यादा ठंड वाली जगह का चयन नहीं करना चाहिए। स्ट्रॉबेरी की खेती किसी भी उपजाऊ मिट्टी में की जा सकती है। किन्तु बलुई दोमट मिट्टी में स्ट्रॉबेरी का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है। इसकी खेती में भूमि का पी० एच० मान 5.5 से 6.5 के मध्य होना चाहिए। स्ट्रॉबेरी का पौधा ठंडी जलवायु में होता है। मैदानी क्षेत्रों में इसकी फसल आसानी से तैयार की जा सकती है। इसके पौधों को अच्छे से विकास करने के लिए 20 से 30 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है, तथा अधिक तापमान होने पर पौधों को विकास करने में दिक्कत होती है। गमले में भी स्ट्रॉबेरी उगाने से अच्छे फल लगते हैं। मई-जून माह में फलने वाली स्ट्रॉबेरी प्रजाति आपको शुरुआती गर्मियों में फल देगी और

दिन तटस्थ/ डे न्यूट्रल स्ट्रॉबेरी प्रजाति के पौधे जून माह में फलने वाली स्ट्रॉबेरी प्रजाति की तुलना में लंबा फलन मौसम प्रदान करती हैं तथा पौधे पूरे गर्मियों के मौसम में फलों का उत्पादन करते हैं।

स्ट्रॉबेरी की कुछ उन्नत किस्में

किसान बागवान स्ट्रॉबेरी की खेती किस्मानुसार कर अधिक लाभ कमाते हैं। भारत में स्ट्रॉबेरी की कुछ ही उन्नत किस्मों को उगाया जा रहा है, जिन्हें अलग-अलग क्षेत्रों के हिसाब से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है। कुछ उन्नत किस्में जैसे विंटर स्टार, कैपरी, नाबिला, विंटर डाउन, ब्लैक मोर, सिसकेफ़, फेयर फाक्स, ओफ्रा, कमारोसा, एलिस्ता, स्वीट चार्ली, चांडलर आदि बहुत प्रचलित हैं। भारत में सबसे पहले आयातित किस्मों में से प्रमुख टीओगा, टोरे, शास्ता, रेड कोट, और एन०आर० राउंड हेड आदि थी जिसमें एन०आर० राउंड और टोरे का सबसे बड़ा फल 4-5 ग्राम का था। बाद में और भी बड़े फलों वाली किस्मों जैसे डगलस, कॉनफिटुरा, गोरेला, पजारो, फर्न, अददी, सलवा, ब्राइटन, बेलरुबी, दाना और एटना आदि प्रजातियों को आयातित किया गया। इन किस्मों के फल का औसतन वजन 7 से 35 ग्राम तक था। भारतीयों के लिए कम मीठी होने के कारण ये प्रजातियाँ ज्यादा प्रचलित नहीं हुई।

स्ट्रॉबेरी के पौधों की रोपाई

स्ट्रॉबेरी के पौधों की रोपाई पौधे से पौधे की 15-30 से०मी० और लाइनो में 30-45 से०मी० की दूरी पर की जाती है। इसके लिए खेत में जमीन से उठी 3-6 इंच की क्यारियाँ तैयार की जाती है। पहाड़ी ढलानों में स्ट्रॉबेरी के 10 पौधों को 150 X 60 से०मी० के क्षेत्र में लगाया जाता है। गोबर की खाद 5 किलोग्राम प्रति क्यारी (20 टन/हे०) और एन० पी० के० की 2:2:1 की मात्रा को अनुमोदित किया गया है। इसके पश्चात् टपक सिंचाई की पाइपलाइन को बिछा दिया जाता है। पौध रोपाई के लिए 10 सितम्बर से 15 अक्टूबर के मध्य का समय अच्छा होता है तथा तापमान अधिक होने पर पौधों को अक्टूबर के अंत तक भी लगाया जा सकता है।



स्ट्रॉबेरी के पौधों की सिंचाई

स्ट्रॉबेरी के पौधों की सिंचाई टपक या फव्वारा विधि द्वारा की जाती है, इससे पौधों को पर्याप्त मात्रा में पानी प्राप्त हो जाता है। स्ट्रॉबेरी के खेत में नमी बनाये रखने के लिए जरूरत के अनुसार सिंचाई करते रहना चाहिए। इसका फलों के आकार व स्वाद पर भी फर्क पड़ता है। पौधों को घास-पात या काली पॉलिथीन शीट से ढकने पर मिट्टी में नमी

बनी रहती है और खरपतवार भी नियंत्रित रहता है।

स्ट्रॉबेरी के फलों की पैदावार और तुड़ाई

स्ट्रॉबेरी की अलग - अलग किस्मों से भिन्न - भिन्न पैदावार प्राप्त होती है। सामान्य तौर पर इसके एक पौधे से 200 से 900 ग्राम तक फल प्राप्त हो जाते हैं। जिससे किसानों को एक एकड़ के खेत से 80 से 100 क्विंटल का उत्पादन प्राप्त हो जाता है। स्ट्रॉबेरी का बाज़ारी भाव 300 से 600 रुपए प्रति किलो तक होता है। पौध रोपण के दूसरे व तीसरे साल में सबसे ज्यादा पैदावार होती है और उसके बाद फल के आकार और पैदावार में गिरावट आ जाती है। इसलिए तीन साल के बाद पौध रोपण दौबारा कर लेना चाहिए। फलों को सड़ने व फफूंद से बचाने के लिए क्यारियों में घास या पॉलिथीन शीट बिछा देनी चाहिए। स्ट्रॉबेरी के पौधों पर लगे फल का रंग जब 70 प्रतिशत व आधे से ज्यादा तक आकर्षक दिखाई देने लगे उस दौरान फलों की तुड़ाई कर ली जाती है। इसके फलों की तुड़ाई अलग-अलग दिनों और छोटी-छोटी टोकरियों में की जाती है ताकि फल खराब न हो। फलों की तुड़ाई के समय उन्हें कुछ दूरी पर डंडी के साथ तोड़ना होता है ताकि फलों में हाथ न लगे। इसके बाद फलों की पैकिंग हवादार गतों व प्लास्टिक की प्लेटो में करना काफी अच्छा होता है।

स्ट्रॉबेरी के पौधों के रोग

स्ट्रॉबेरी के पौधों पर भी कई तरह के रोग व कीट देखने को मिल जाते हैं। यदि इन रोगों की रोकथाम समय पर नहीं की जाती है, तो पैदावार में अधिक प्रभाव देखने को मिलता है। पौधों पर लगने वाले कीटों में विविल्स, झरबेरी, रस भृग, मक्खियाँ चेफर, पतंगे, सूत्रकृमी आदि प्रमुख हैं। सूत्रकृमी की समस्या के समाधान के लिए फसल चक्र प्रणाली को अपनाना चाहिए। तीन वर्ष बाद स्ट्रॉबेरी के खेतों में एक साल के लिए सरसों, मक्की, राई व ओट आदि फसलों को उगाना चाहिए। संक्रमित स्ट्रॉबेरी पौध को नष्ट कर देना चाहिए। ग्रे मोल्ड, वेर्तिसिलियम विल्ट और रेड कोर आदि स्ट्रॉबेरी की प्रमुख बीमारियाँ हैं। कॉपर ओक्सीक्लोराइड की

स्प्रे ग्रे मोल्ड की रोकथाम के लिए सहायक है और 1% बोर्डो मिक्सचर में पौधे लगाने से पहले डुबोना मिट्टी जनित रोगों के रोकथाम में सहायक होता है। इन रोगों से पौधों को बचाने के लिए अनेक प्रकार के उपचार किये जाते हैं, इसमें जड़ रोग के लिए नीम की खली को पौधों की जड़ों में डाला जाता है। पत्ती रोग में पत्ती ब्लाइट, पत्ता स्पॉट और खस्ता फफूंदी आदि का प्रकोप देखने को मिलता है। आप रोग की पहचान कर अनुमोदित फफूंदनाशक व कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव पौधों पर कर सकते हैं।